© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 02 | January - March 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

साहित्यिक परिस्थितियों में नारी (20वीं सदी के विशेष संदर्भ में)

सुनीता रानी, शोधार्थी एन.आई.आई.एल.एम. विश्वविद्यालय कैथल (हरियाणा)

ISSN : 2278-6848
03
9 772278 684800
© International Journal for Research Publication and Seminar

आधुनिक काल को कई उपविभागों में विभक्त किया गया है। डॉ० नगेन्द्रानुसार ये उपविभाग निम्नवत हैं–

1. पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु युग) 1857–1900 ई.
2. जागरण सुधार काल (द्विवेदी युग) 1900 ई.–1918 ई.
3. छायावादी युग (1918–1938ई.)
4. छायावादोत्तर काल (1918–1938ई.)

(अ) प्रगति प्रयोगकाल (1938ई. से 1953 ई.)

(ब) नवलेखन काल (1953 ई.....)

नवलेखन काल की समय–सीमा 1954 ई. से 1972 ई. तक मानी गई है। तत्पश्चात अद्यतन लेखन काल प्रारम्भ हुआ जिसे 1973 से वर्तमान तक माना जा सकता है।

महिला साहित्यकारों ने नवलेखन काल समय में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक परिस्थितियों का वर्णन अपनी रचनाओं में किया जिससे समाज में नई चेतना की जागृति का उत्पात हुआ। महिला साहित्यकारों में सर्वप्रथम महादेवी वर्मा का नाम प्रसिद्ध है। महादेवी के काव्य में प्रेम वेदना की गहनता प्रचुर मात्रा में मिलती है। वेदना उन्हें इतनी प्रिय है कि वे उसका साथ नहीं छोड़ना चाहती क्योंकि इसी वेदना के माध्यम से उन्होंने सर्वशक्तिमान चेतनामय ईश्वर का दर्शन किया। यथा–

''मेरे बिखरे प्राणों में सारी करूणा ढुलका दो,
मेरी छोटी सीमा में अपना अस्तित्व मिटा दो।।
पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूढ़ा, तुम में ढूढूगी पीड़ा।।''

महादेवी वर्मा जी के काव्य में नारी सुलभ सात्विकता विद्यमान है। महादेवी के हृदय में वेदना की कोमल भावनाओं के साथ–साथ नारी हृदय की स्वाभाविक सात्विकता भी समाहित है। उनके गीतों की प्रेम वेदना में न द्वेष है न घृणा है, न कटुता है न प्रतिकार। यदि है तो केवल

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 02 | January - March 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

वेदना, जिसमें उनका अपना नहीं, बल्कि समस्त मानव जाति का असोम शोक समाया हुआ है। महादेवी की आध्यात्मिकता में विराहानुभूति अध्याय प्रधान है किन्तु वे परम्परागत धार्मिक भावनाओं से न जुड़कर मनुष्य के जीवन से अधिक जुड़ी है। महादेवी के काव्य में भगती की तन्मयता की प्रधानता भी विद्यमान है।

वर्तमान काल में महिला साहित्यकारों ने कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना, एकांकी, भेंटवार्ता, रिपोर्ताज, जीवनी, यात्रा वृतान्त, आत्मकथा, रेखाचित्र–संस्मरण, डायरी आदि के माध्यम से वर्तमान काल की परिस्थितियों का चित्रण कर समाज विशेषकर महिला समाज को विशेष रूप से प्रभावित किया है।

वर्तमान में बदलते सामाजिक परिवेश में महिला साहित्यकारों ने अपने कथानकों में सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ वर्णन कर महिलाओं को वास्तविकता से अवगत कराने का भरसक प्रयास किया ह।

नई कहानी आन्दोलन 1950 के आस–पास शुरू होता है, जिसमें मुख्य रूप से तीन कहानीकार–मोहनराकेश, राजेन्द्रयादव तथा कमलेश्वर; दो आलोचक नामवर सिंह, देवीशंकर अवस्थी तथा अनेक पत्रिकाओं (कहानी–उपन्यास) के संपादक भैरो प्रसाद गुप्त भाग लेते हैं। कहानी संबंधी विभिन्न आन्दोलन सन् 1964 में ''आधार–पत्रिका संचेतना'' के सम्पादक डा० महीप सिंह ने 'संचेतन कहानी' का प्रवर्तन किया। 1971 में कमलेश्वर ने 'समानान्तर कहानी' का प्रवर्तन किया। महिला कहानीकारों ने पूर्व में उषा देवी मित्रा, जिन्होंने 'पिंड कहाँ' तथा सुभद्रा कुमारी चौहान जिन्होंने–'बिखरे मोती', उन्मादिनी, पापी पेट आदि कहानी लिखी।

नई कहानी के दौर में शिवानी–जिन की 'सती', 'करिये छिमा' प्रसिद्धतम कहानियों में से हैं। मृदुला गर्ग जिनकी–कितनी कैदें, टुकड़ा–टुकड़ा, आदमी उर्फ सेम, डैफोडिल जल रहे हैं, ग्लेशियर से, शहर के राम, दुनिया का कायदा, उसका विद्रोह आदि कहानियां प्रसिद्ध हैं। मैत्रीय पुष्पा की चिन्टार, लालमलियां नामक कहानियां चर्चा में रही। उषा प्रियवंदा–द्वारा लिखित वापसी, जिन्दगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, फिर बसन्त आदि कहानियां शिक्षाप्रद रहीं। नासिरा शर्मा ने 'खुदा की वापसी' नामक कहानी में परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया। कृष्णा सोबती ने अनेक कहानियां लिखी जिनमें मित्रों मरजानी, डार से बिछुड़ी, यारों की यार, तीन पहाड़, नाम पटिटका, ये लड़की, बादलों के घेरे (संग्रह) आदि प्रसिद्ध हैं। श्रीमती सत्यवती मलिक, शिवरानी विश्नोई, श्रीमती

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 02 | January - March 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

स्वरूपकुमार बख्शी, सोमावीरा, इन्दुमती, राधिका जोहरी, पुष्पा महाजन, श्रीमती विपुला देवी और कमलेश बख्शी आदि कहानीकार प्रसिद्ध हैं।

वर्तमान में समाज में व्याप्त कुरीतियां, द्वेष, भ्रष्टाचार, अपराध, संकीर्णता आदि को आधार मानकर महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियां लिखी। श्रीमती शिवरानी विश्नोई अपनी कहानियों में अर्थ पर आधारित पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित दुर्गुणों के प्रति अपनी घृणा प्रकट की है। एक अन्य कहानी लेखक ने पात्रों द्वारा प्रेम एवं देश सेवा के क्षेत्र में उज्जवल आदर्श उपस्थित किये हैं एवं सामयिक, राजनीतिक स्थितियों के चित्र अंकित करने के प्रति विशेष जागरूकता का परिचय दिया है। श्रीमती स्वरूप कुमार बख्शी ने अपनी कहानियों में भौतिक विज्ञान की यांत्रिकता में मानव के अन्दर का रस चूसकर उसे निर्जीव मशीन में परिवर्तित कर दिया है। श्रीमती रजनी पणिकर की कहानी 'मन की आँखें' की मालविका भारतीय नारी की प्रतीक है जो निस्वार्थ सेवा आदि सदगुणों से सास के विरोधी मन को भी अपने पक्ष में कर लेती है। मानव जीवन की सगति सत और असत के ज्ञान मात्र से ही नहीं हो जाती बल्कि अपने जीवन में उस 'सत' को ढालने से होती है। यही एकता की कड़ी है। यही आदर्श हमें कमलेश वख्शी की कहानी 'संदेशी बाबा' में मिलता है। जहाँ पोस्टमैन श्याम अपने दर्द को छुपाकर वह के साथ मिलकर देश प्रेम के गीत गाता हुआ हमें सब को सिखाता है कि दूसरों को सुखी देख सुख मनाओ। यही मानव धर्म है, यही है वह भावनात्मक एकता जो उसे बेटा और काका से सबका दादा बना देती है।

हिन्दी साहित्य के गद्य साहित्य में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। मुंशी प्रेमचन्द ने उपन्यासों को 'मानव चरित्र का आख्यान' कहा है। कथावस्तु तथा शिल्प की दृष्टि से 'परीक्षा गुरु' हिन्दी का पहला उपन्यास है। प्रेमचन्द ने तिलस्म और ऐय्यारी, जासूसी, सुधारवादी, उपन्यास लिखे। गोदान, निर्मला, गबन, प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यासों में से हैं। तिलस्म और ऐय्यारी विषयक उपन्यास लिखने में देवकी नन्दन खत्री का नाम सर्वश्रेष्ठ है।

गोपाल दास गहमरी ने जासूसी विषयक उपन्यास लिखने में प्रसिद्धि पाई। जैनेन्द्र तथा इलाचन्द्र जोशी ने मनोविश्लेषण परक उपन्यास लिखे। हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य चतुरसेन तथा वृन्दावनलाल शर्मा ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। 'मैला आंचल' ऐतिहासिक उपन्यास सुप्रसिद्ध है।

वर्तमान में महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आंचलिक परिस्थितियों का चित्रण कर समाज में क्रान्तिकारी संदेश देने का प्रयास किया है। वर्तमान में महिला उपन्यासकारों ने अनेक उपन्यास लिखे हैं जो निम्नवत हैं–

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 02 | January - March 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

कृष्णा सोबतीः	मित्रो मरजानी (लम्बी कहानी के रूप में चर्चित) डार से बिछुड़ी (1958) सुरजमुखी अंधेरे के (1972 पात्राः रती), जिन्दगी नामा (1979, की पंजाब की विभाजन पूर्व स्थिति पर) दिल–ओ दानिश(1993), यारों के यार, आदमी नामा, ए–लड़की!
उषा प्रियवंदाः	पचपन खंबे लाल दिवारें (सुषमा (नायिका), रूकोगी नहीं...राधिका! जययात्रा;
मनु भण्डारी प्रियवंदाः	आपकी बंटी, पात्र (शकुन और जय) महाभोज (राजनीतिक विसंगतियों पर रचित; पात्रः दा साहब, बिसेसर, बिन्दा
शशि प्रभा शास्त्रीः	अमलतास, नावें, सीढ़ियां, उम्र एक गलियारे की, मीनारें
ममता कालियाः	बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, एक पत्नी के नोट्स, साँची
मृदुला गर्गः	उसके हिस्से की धूप, चितकोबरा, अनित्य, मैं और मैं, कठगुलाब, वंशज
राजीसेठः	तत्सम, निरकवच
निरूपमा सेवतीः	पतझड़ की आवाजें, बंटता हुआ आदमी, मेरा नरक अपना है
मृणाल पाण्डेयः	विरूद्ध, पटरंगपुर पुराण, देवी, रास्तों पर भटकते हुए
मृदुल भगतः	अनारो, लेडी क्लब
कमल कुमारः	अपार्थ
कुसुम कुमारः	हीरामल हाईस्कूल
चित्रा मुदगलः	एक जमीन अपनी
झूला डालमियाः	छत पर अर्पणा
नासिरा शर्माः	सात नदियाँ एक समुन्द्र, शाल्मली, जिन्दा मुहावरे, ठीकर की मंगनी, आओ, पेपे घर चलें, छिन्नमस्ता, अपने–अपने चेहरे, पीली आंधी
मैत्रेयी पुष्पाः	बेतवा बहती रही, इदन्नमम्, चाक, झूला नट, स्मृति दंश, विजन, अगनपांखी, अलमा कबूतरी
मेहरून्निमा परबेजः	उसका घर, आँखों की दहलीज
सुमिता जैनः	बिन्दु
सूर्यबालाः	मेरे सन्धिपत्रा

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 02 | January - March 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

कुसुम अंसलः	अपनी–अपनी यात्रा, कलिकथा, वाया बाईपास, शेष कादम्बरी
शिवानीः	चौदह फेरे, कृष्ण कली,
कृष्णा अग्निहोत्रीः	टपरे वाले
मालती लफ्फरः	इन्नी
रजनी पन्निकरः	महानगर की गीता, दूरियाँ
मालती जोशीः	पाषाण युग
मीनाक्षीपुरीः	जाने पहचाने अजनबी
कान्ता भारतीः	रेत की मछली
मैत्रेयी देवीः	झिपया नहन्यते
पदमा सचदेवाः	भटको नहीं धनंजय
प्रतिभा डावर	वह मेरा चाँद

महिला उपन्यासकारों ने एक ओर तो सामाजिक समस्याओं को अपने उपन्यासों का विषय बनाया दूसरी ओर ऐतिहासिक कथानकों पर नवीन दृष्टि पर विचार करते हुए मनोरंजक एवं सुरूचिपूर्ण उपन्यासों की रचना की। इस समय तक हिन्दी उपन्यास का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया और वह मानवीय संबंधों को उजागर करने वाला एक महत्त्वपूर्ण साधन बन गया। राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना से उपन्यास का क्षितिज इस काल में अत्यन्त विस्तृत हो गया है।

'साहित्य' के सत्य और 'इतिहास' के सत्य में भेद है। इतिहास में जहाँ उपलब्ध प्रमाणों से सत्य की खोज की जाती है वहीं साहित्य में संभावना एवं कल्पना के बल पर सत्य को गढ़ा जाता है। इतिहास में जहाँ तथ्यात्मक विवरणों की प्रधानता होती है वहीं साहित्य में संभावनाओं पर अधिक बल दिया जाता है। साहित्य निर्माण में कल्पना तत्व के योगदान से सभी परिचित हैं, बिना कल्पना के योगदान के कवि की रचना तथ्य, कथन मात्र रह जाती ह। कल्पना एक मानसिक तत्व है। वस्तुतः कल्पना एक ऐसी शक्ति है जो पूर्व अनुभवों की प्रतिलिपि पुरूत्पादित करती है। कल्पना ही नूतन वस्तुओं, विचारों का आविष्कार करती है।

आदिकाल, उत्तर मध्यकाल, पूर्व मध्यकाल में हिन्दी साहित्य में महिलाओं का योगदान नगण्य ही रहा है। रीतिकालीन समय में मीराबाई एक ऐसी साहित्यकार थी जिन्होंने अपनी लेखनी से तत्कालीन समाज में ख्याति अर्जित की। आधुनिक काल में शिक्षा के प्रकाश से महिलाओं में जागृति

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 02 | January - March 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

का जागरण हुआ तथा महिलाएं अनेक क्षेत्रों (साहित्यिक क्षेत्र सहित) में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम होने लगी।

आधुनिक काल से वर्तमान तक महिलाओं ने साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई है। महिलाओं ने हिन्दी साहित्य के गद्य तथा पद्य क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान दिया है। महादेवी वर्मा ने गद्य तथा पद्य क्षेत्रों में अपनी उत्कृष्ट रचनाओं द्वारा साहित्य में विशेष स्थान बनाया। सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी साहित्य में अपनी अमिट छाप छोड़ी। हिन्दी साहित्य की गद्य–विधाओं यथा–उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, आलोचना, एकांकी, भेंटवार्ता, रिपोर्ताज, जीवनी, यात्रा–वृतान्त, आत्मकथा, रेखा चित्र–संस्मरण, डायरी आदि में महिलाओं ने उत्कृष्ट तथा समाज प्रभावी रचनाओं से हिन्दी साहित्य में विशिष्ट योगदान दिया है। वर्तमान में अनेक महिला साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपनी गहरी पैठ बनाई है।

महिला कवियित्रयों ने अपनी कविताओं में देशभक्ति, राष्ट्रीयता की भावना, प्रेम वेदना, करूणा, आध्यात्मिकता, भक्ति भावना, विरह–वेदना से ओत–प्रोत रचनाएं रचित कर समाज में नई चेतना जागृत करने का प्रयास तो किया ही, साथ ही हिन्दी साहित्य को भी अपनी अहम भूमिका द्वारा गद्य तथा पद्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ सूची

1.	डा०रमेशचन्द्र मजूमदार	प्राचीन भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास 41–यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर दिल्ली–110007
2.	महादेवी वर्मा	यामा पृ.84–87
3.	डा० निशान्त सिंह	समाज राजनीति और महिलाएं
4.	श्रीमती सुधारानी श्रीवास्तव	भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति
5.	डा० अशोक तिवारी	प्रतियोगिता साहित्य, नई दिल्ली–110003